अक्षय समृद्धि का प्रतीक "पारद गणपति"

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रुप होने के कारण सभी देवी–देवताओं के द्वारा वंदनीय एवं स्पृहनीय है। यह अनेक चैतन्य मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होकर जिस किसी भी घर में भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग, लक्ष्मी प्रतिमा, गणेश प्रतिमा तथा दुर्गा प्रतिमा के रूप में स्थापित होता है वह घर, वह परिवार, सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शांति का अनुभव करता है। सत्य तो यह है कि पारद पूर्ण संसार का एक आधारभूत तत्व है इसलिए धर्म, अर्थ और काम मोक्ष प्राप्ति का मूलभूत साधन भी है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित हो तथा पूजन हो तो समस्त वातावरण इसके कारण धन–धान्य से पूर्ण होकर आध्यात्ममय बन जाता है। पारद धातु अपने आप में पूर्णता का प्रतीक है। सदियों से पारद पर शोध होते आए हैं जहाँ यह भौतिक समृद्धि का परिचायक है वहीं यह आयुर्वेद की पूर्णता भी है। पारद ही एक ऐसी धातु है जिसमें अनेकों आयुर्वेदिक गुण समाए हुए हैं। पारद अनेक रूपों में उपयोगी है, आयुर्वेद के अतिरिक्त तंत्र जगत में भी इसका बहुत योगदान है।आयुर्वेदिक रस–शास्त्रों के अनुसार अठारह प्रकार के विशेष संस्कार करने के उपरान्त पारे के सभी दोष दूर हो जाते हैं, किन्तु इसके लिए सद्गुरु की कृपा एवं देखरेख में ही "रसायन सिद्धि" प्राप्त हो सकती है, किताबी ज्ञान से नहीं। धरणीधर संहिता के अनुसार इन सभी संस्कारों जैसे– स्वेदन संस्कार, मर्दन संस्कार, मुर्च्छन संस्कार, उत्थापन संस्कार, पात्तन संस्कार, रोधन संस्कार, बोधन संस्कार, गगन ग्रास संस्कार (अभ्रक अथवा स्वर्ण भक्षण) चारण संस्कार, गर्भदुति संस्कार, ब्राह्मदुति संस्कार, जारण संस्कार, रंजन संस्कार, सारण संस्कार, क्रमण संस्कार, वैघ संस्कार के पूर्ण होने पर ही प्राकृतिक द्रव्य पारा किसी आकृति में परिवर्तित हो जाता है। ठोस रूप कथित पारद से जो सामग्री बनती है, वह अमूल्य एवं चमत्कारिक होती है। मनुष्य को ऋद्धि–सिद्धि की प्राप्ति कराती है। शारीरिक एवं मानसिक शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति का विकास करने में पूर्णतया सक्षम है, तथा आर्थिक व्यवधान को दूर कर कारोबार में वृद्धि करती है। किसी भी तांत्रिक क्रिया में कवच की भाँति मनुष्य की रक्षा करती है एवं तांत्रिक क्रियाओं को प्रभावहीन कर देती है।

रसायन विज्ञान के माध्यम से पारद का मर्दन कर भस्म के द्वारा प्राणदायक कई औषधियाँ भी बनाई जाती है, और तंत्र जगत् में तो इसका विशेष स्थान है ही। साधनाओं में पूर्णता के लिए पारद की साधना सम्पन्न की जाती है।

मंत्रों से आबद्ध स्वर्णग्रास युक्त पारद से निर्मित प्रतिमा तो अपने आप में चैतन्य होती है इसकी उपस्थिति ही अपने आप में पूर्णता की द्योतक मानी जाती है, अतः प्रयास करके मंत्रों से आबद्ध पारदमूर्ति किसी भी रुप में घर में स्थापित करनी चाहिये। ईश्वरीय प्रदत्त इस दुर्लभ देन को आपके लिए, आपके परिवार के लिए और भावी पीढ़ी के लिए आपको सौंप रहे हैं। चिंता और दुःख की बात तो यह है कि ईश्वरीय प्रदत्त इस दुर्लभ देन से विश्व ही नहीं हमारे भारतवासी भी पूर्णतः अपरिचित हैं। अध्ययन और शोध से जो बातें सामने आयी है उसके अनुसार 10–15 प्रतिशत व्यक्ति ही इस विषय में मात्र सुन पायें है और मुश्किल से पाँच प्रतिशत व्यक्ति दर्शन लाभ कर पायें और मात्र 1 प्रतिशत व्यक्ति ही इसकी स्थापना कर पाये हैं। इसका मुख्य कारण अनुपलब्धता भी है। कहीं पर भी मिल जाता है तो बिना शोधन संस्कार किये अपवित्रता के साथ दूषित तरीके से निर्मित। सिद्ध तथा प्राण–प्रतिष्ठा का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि देश में कुछ गिने–चुने संस्थान ही हैं जो इस पुण्य कार्य करने में सक्षम हैं एवं इस कार्य के लिए समय निकाल पाते हैं। जगद्गुरु शंकराचार्यों की अपील को ध्यान में रखते हुए हमारा उद्देश्य यही है कि इस विद्या का प्रचार करें। पारदेश्वर गणपति की स्थापना के लिए प्रत्येक व्यक्ति श्रद्धालुजनों को प्रेरित करें ताकि सभी इसका लाभ उठाकर सुखी रह सकें।

आप स्वयं पारदेश्वर शक्ति को अपने निवास स्थान, व्यापारिक प्रतिष्ठान तथा फैक्ट्री आदि में स्थापित कर इन स्थानों को जागृत देव मंदिर बनाये और अक्षय पुण्य के साथ भौतिक लाभ उठायें। आप स्वयं तो स्थापित करें ही अपने स्वजन, परिजनों को भी स्थापना हेत प्रेरित कर यह प्रयास

करें कि इस दुर्लभ देन के विषय में उन्हें भी जानकारी हो।

हमारे तंत्र, मंत्र दृष्टा, ज्योतिष मनीषी तथा तत्वदर्शियों के साथ जगद्गुरु शंकराचार्य वर्तमान में जन समाज की स्थितियों का अवलोकन करते हुए प्रत्येक गृहस्थ के निवास में श्रद्धानुसार पारदेश्वर शिवलिंग, पारदेश्वरी लक्ष्मी, पारदेश्वरी महादुर्गा, पारदेश्वर गणपति स्थापना हेतु जो अपील की हैं वह इसलिए कि हम मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहें।

आज पग–पग पर एक से एक बीमारियों का जाल फैला हुआ है, गली–गली में टोना–टोटका तथा टुच्चे तांत्रिकों का करिश्मा चला हुआ है जिससे प्रकट रुप से न सही लेकिन अप्रत्यक्ष रुप से हम भयभीत रहते ही हैं और बाधाग्रस्त होने पर ऐसे ही अनाड़ी तांत्रिकों के चक्कर लगाते तन, मन, धन लुटाते रहने की स्थिति बनी रहती है। हजारों परिवार भुक्त भोगी नजर आते हैं इसके अतिरिक्त छोटी–मोटी समस्याएँ अक्सर घेरे रहती है। कई परिवार को सब कुछ होते हुए भी जीवन को व्यर्थ मान बैठते हैं, सुख–शांति के लिए तरसते रहते हैं और उपाय कुछ भी नजर नहीं आता। इनसे मुक्त होने तथा ऐसी ही समस्याओं से बचे रहने के लिए आध्यात्मिक वैज्ञानिक प्रभाव से युक्त ईश्वरीय प्रदत्त पारद निर्मित इन प्रतिमाओं को अपने निवास स्थान में अवश्य ही स्थापित करें।

दर्शन मात्र से आप सुख–शांति का अनुभव तो करेगें ही। आप के परिजन, मित्रजन भी दर्शन कर आश्चर्य के साथ प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। साथ ही आप अनुभव करेंगे कि जीवन में प्रथम बार ऐसी अमूल्य धरोहर का दर्शन लाभ किया है, उसे प्राप्त किया है।

पारदेश्वर गणेश– शिव के पुत्र गणेश देवताओं में अग्र पूज्य है। इनकी पूजा किये बिना सभी कार्य अधुरे रहते हैं। यदि किसी भी कार्य को निर्विघ्न पूर्ण करना हो तो सर्वप्रथम ऋद्धि–सिद्धि दाता गणेश का ध्यान किया जाता है। अतः पारदेश्वर गणेश की महिमा अपरम्पार है।

इस बार की गणेश चतुर्थी पर, दीपावली पर्व पर आप भी पारदेश्वर लक्ष्मी, पारदेश्वर गणेश, पारदेश्वर महादुर्गा, पारदेश्वर शिवलिंग आदि स्थापित कर अपने जीवन को जगमगाती रोशनी से भर दें। इन वस्तुओं का उपयोग कर उन ऋषि–महात्माओं की तपस्या को सफल बनायें जिन्होंने मानव जाति के लिए इतनी बड़ी खोज कर भौतिक सम्पन्नता का मार्ग सुझाया है और यदि अब भी हम दरिद्रता का रोना ही रोते रहना चाहते हैं तो साक्षात् लक्ष्मी भी हमें सम्पन्न नहीं बना सकती।

साधना सामग्री– पारद गणपति– 2500 से प्रारम्भ

दशावतार विष्णु कवच

रामो भूत्वा रामम् यजेत्, कृष्णो भूत्वा कृष्णम् यजेत्।
विष्णो भूत्वा विष्णूम् यजेत्, शिवो भूत्वा शिवम् यजेत्।।

यानि जिस देवता की मनुष्य पूजा उपासना करता है उसमें पूर्णतः या अंशात्मक रूप में, व्यक्तित्व में, व्यवहार में उस देवता की छवि विकसित हो जाती हैं।

जिस प्रकार भगवान विष्णु ने दशावतार रूपों में पृथ्वी पर अवतरित होकर साधारण मनुष्य की तरह जीवन जीया एवं उन-उन अवतारों में जिस प्रकार एक मावन सुख-दुःख, हर्ष, विशाद की अनुभूति करता हैं उसी प्रकार उन अवतार रूपों में उन्होंने भी समस्त भावनाओं को जिते हुए एक साधारण मनुष्य की तरह अपने दुःखों पर, अपनी समस्याओं पर विजयी प्राप्त की। इस कवव का निर्माण इन्हीं दस अवतारों की विशिष्टताओं को चुन-चुन कर एकत्रित कर निर्मित किया गया है जिसे धारण कर धारक का भी उन विशेषताओं का गुणात्मक रूप में विकास हो सके एवं जिस सहिष्णुता से उन्होंने अपने दुःखों, कष्टों, विशादों पर विजयी प्राप्त की उसी प्रकार एक आम आदमी भी अपने जीवन में व्याप्त समस्याओं पर उसी साहस, सहिष्णुता व धैर्य से विजयी प्राप्त कर सकें।

कवच न्यौच्छावर दक्षिणा 3500 रू.

गणेश जी का हर अंग है ज्ञान की पाठशाला

गणेश पुराण के अनुसार भगवान गणेश का जन्म भाद्रमास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को हुआ था। इसलिए हर साल भाद्र मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणेश उत्सव मनाया जाता है। गणेश को वेदों में ब्रह्मा, विष्णु, एवं शिव के समान आदि देव के रूप में वर्णित किया गया है। इनकी पूजा त्रिदेव भी करते हैं। भगवान श्री गणेश सभी देवों में प्रथम पूज्य हैं। शिव के गणों के अध्यक्ष होने के कारण इन्हें गणेश और गणाध्यक्ष भी कहा जाता है। भगवान श्री गणेश मंगलमूर्ति भी कहे जाते हैं क्योंकि इनके सभी अंग जीवन को सही दिशा देने की सिख देते हैं।

बड़ा मस्तक– गणेश जी का मस्तक काफी बड़ा है। अंग विज्ञान के अनुसार बड़े सिर वाले व्यक्ति नेतृत्व करने में योग्य होते हैं। इनकी बुद्धि कुशाग्र होती है। गणेश जी का बड़ा सिर यह भी ज्ञान देता है कि अपनी सोच को बड़ा बनाए रखना चाहिए।

छोटी आंखें– गणपति की आंखें छोटी हैं। अंग विज्ञान के अनुसार छोटी आंखों वाले व्यक्ति चिंतनशील और गंभीर प्रकृति के होते हैं। गणेश जी की छोटी आंखें यह ज्ञान देती है कि हर चीज को सूक्ष्मता से देख–परख कर ही कोई निर्णय लेना चाहिए। ऐसा करने वाला व्यक्ति कभी धोखा नहीं खाता।

सूप जैसे लंबे कान– गणेश जी के कान सूप जैसे बड़े हैं इसलिए इन्हें गजकर्ण एवं सूपकर्ण भी कहा जाता है। अंग विज्ञान के अनुसार लंबे कान वाले व्यक्ति भाग्यशाली और दीर्घायु होते हैं। गणेश जी के लंबे कानों का एक रहस्य यह भी है कि वह सबकी सुनते हैं फिर अपनी बुद्धि और विवेक से निर्णय लेते हैं।

बड़े कान हमेशा चौकन्ना रहने के भी संकेत देते हैं। गणेश जी के सूप जैसे कान से यह शिक्षा मिलती है कि जैसे सूप बुरी चीजों को छांटकर अलग कर देता है उसी तरह जो भी बुरी बातें आपके कान तक पहुंचती हैं उसे बाहर ही छोड़ दें। बुरी बातों को अपने अंदर न आने दें।

गणपति की सूंड– गणेश जी की सूंड हमेशा हिलती डुलती रहती है जो उनके हर पल सक्रिय रहने का संकेत है। यह हमें ज्ञान देती है कि जीवन में सदैव सक्रिय रहना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसा करता है उसे कभी दुखः और गरीबी का सामना नहीं करना पड़ता है।

शास्त्रों में गणेश जी की सूंड की दिशा का भी अलग–अलग महत्व बताया गया है। मान्यता है कि जो व्यक्ति सुख–समृद्वि चाहते हो उन्हें दायीं ओर सूंड वाले गणेश की पूजा करनी चाहिए। शत्रु को परास्त करने एवं ऐश्वर्य पाने के लिए बायीं ओर मुड़ी सूंड वाले गणेश की पूजा लाभप्रद होती है।

बड़ा उदर– गणेश जी का पेट बहुत बड़ा है। इसी कारण इन्हें लंबोदर भी कहा जाता है। लंबोदर होने का कारण यह है कि वे हर अच्छी और बुरी बात को पचा जाते हैं और किसी भी बात का निर्णय सूझबूझ के साथ लेते हैं।

अंग विज्ञान के अनुसार बड़ा उदर खुशहाली का प्रतीक होता है। गणेश जी का बड़ा पेट हमें यह ज्ञान देता है कि भोजन के साथ ही साथ बातों को भी पचाना सीखें। जो व्यक्ति ऐसा कर लेता है वह हमेशा ही खुशहाल रहता है।

एकदंत– बाल्यकाल में भगवान गणेश का परशुराम जी से युद्ध हुआ था। इस युद्ध में परशुराम ने अपने फरसे से भगवान गणेश का एक दांत काट दिया। इस समय से ही गणेश जी एकदंत कहलाने लगे। भगवान गणेश ने अपने टूटे हुए दांत को ही लेखनी बना लिया और इससे पूरा महाभारत ग्रंथ लिख डाला।

यह गणेश जी की बुद्धिमत्ता का परिचायक है। गणेश जी अपने टूटे हुए दांत से यह सीख देते हैं कि चीजों का सदुपयोग किस प्रकार से किया जाना चाहिए।